स्वतंत्र काल मे बिहार के आर्थिक विकास में अनुग्रह नारायण सिंह की भूमिका।

बिपिन कुमार सिंह, एस.के.झा

शोध छात्र

विश्वविधालय इतिहास विभाग

बाबासाहब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविधालय, मुजफ्फरपुर

तत्कालीन समाज के समस्त क्षेत्रों में व्याप्त समस्याओं से अनुग्रह नारायण सिंह अत्यन्त दुखी थे। वे समाज में व्याप्त विषमता, अन्याय, घोर शोषण के विरोधी थे, जिसे वे अप्रत्यक्ष व छिपी हिंसा की संज्ञा देते थे, और उसे जड़ से समाप्त करने के लिए वे समाज के स्वरूप को बदलना चाहते थे तथा सच्चे अर्थ में जनता का राज कायम करना चाहते थे। इस हेतु अनुग्रह नारायण सिंह ने समाज में एक नैतिक परिवर्तन की बात उठायी जो समाज के समस्त क्षेत्रों व सभी पक्षों में परिवर्तन उत्पन्न कर जनता को शक्ति प्रदान करेगा। जनता का राज स्थापित करने के लिए ही अनुग्रह नारायण सिंह ने राजनैतिक विकास को साधन के रूप में अपनाया। अनुग्रह नारायण सिंह के अनुसार यह कोई सामान्य विकास नहीं है। शोषण व विषमता को जन्म देने वाली का उद्देश्य है। समाज की नव–रचना के लिए व्यक्ति व समाज दोनों में सर्वागीण परिवर्तन लाने की शक्ति इस आर्थिक में होनी चाहिए। अनुग्रह नारायण सिंह के ही शब्दों में–''समाज और व्यक्ति के जीवन के हर पहलू में क्रान्तिकारी परवर्तिन हो तथा व्यक्ति के जीवन के हर पहलू में क्रान्तिकारी परवर्तिन हो तथा व्यक्ति का व समाज का विकास हो, दोनों ऊँचे उठे, केवल शासन बदले इतना ही नहीं व्यक्ति व

समाज भी बदले । इसलिए मैने राजनैतिक विकास कहा है। आप इसे समग्र विकास भी कह सकते है।

आर्थिक विकास– अनुग्रह नारायण सिंह की आर्थिक विकास विनोबा भावे के सर्वोदय दर्शन से प्रेरित है। वे देश के विासि–कार्यक्रमों के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए देश की परिस्थिति के अनुरूप आर्थिक विकेन्द्रीकरण के पक्षधर थे। उनके विचार में गाँव की भूमी पर स्वामित्व गाँव का होना चाहिए तथा भूमि पर कब्जा खेती करने वाले कृषक का होना चाहिए । स्वयं अनुग्रह नारायण सिंह के शब्दों में–'' समाज में जो प्राकृतिक सम्पत्ति है वह सम्पत्ति समाज की है । वह व्यक्ति के हाथों में तो रह सकती है, पर व्यक्ति की सम्पत्ति के रूप में नहीं, जीविका के साधन के रूप में –''सम्पूर्ण विकास।''

अनुग्रह नारायण ने पुनः इस बात इस पर जोर दिया कि इस प्रकार का परिवर्तन केवल कानून से नहीं होगा। इसके लिए आवश्यक है कि उसके दर्शन को स्वीकार करने वाले कार्य–कर्ताओं को एक बड़ा समूदाय हो, जिसकी किसी नीति में इस कारण निष्ठा हो कि वे स्वयं उसे सहीं मानते हों ताकि जिन्होंने स्वयं ही अपनी जमीन भूमिहीन परिवारों चके बीच बांट दी हो, ऐसे कार्यकर्ताओं की आवश्कता है।

ग्रामीण आर्थिक ढांचे में आमूल–चूल परिवर्तन करने की आवश्यकता पर अनग्रह नारायण सिंह ने विशेष बल दिया। उनके अनुसार कुटीर उद्योगों द्वारा अधिकाधिक उत्पादन किया जाना चाहिए जिससे ग्रामीण युवकों को रोजगार प्राप्त हो सके । यह औद्योगिक विकास मध्यम उद्योंगों , लघु उद्योगों की दिशा में होना चाहिए । इसके लिए इन क्षेत्रों में तकनीकी ज्ञान में सुधार की आवश्यकता है। लघु एवं कुटीर उद्योंगों में सार्वजनिक निगम का अधिकाधिक प्रचलन होना चाहिए। व्यापक क्षेत्र में सार्वजनकि एवं व्यक्तिग स्वामित्व या कम्पनी के स्वामित्व की व्यवस्था को चलने दिया जाना चाहिए। उनकी मान्यता थी कि ययिद श्रमिक ट्रस्टी के रूप में उद्योंग जाना चाहिए।

उनकी मान्यता थी कि यियद श्रमिक ट्रस्टी के रूप में उद्योग का प्रबंध कर सकते हैं तो यह सर्वोत्तम है।

अनुग्रह नारायण पर गांधी जी के संरक्षता के सिद्धान्त का भी अत्यधिक प्रभाव है। पूँजीपति अपने अथाह धन या चल, अचल सम्पति का स्वामी नहीं है, वरन् उसका संरक्षक मात्र है। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के पश्चात् जो सम्पत्ति उसके पास है वह समाज हित व कल्याण में प्रयोग की जानी चाहिए। हर आदमी अपनी बुद्धि, धन व श्रम का मालिक नहीं वरन् ट्रस्टी है, यह भावना जागृत हो।

विकेन्द्रित आर्थिक व्यवस्था का लक्ष्य स्थानीय व क्षेत्रीय साधनों का पूरा उपयोग करके स्थानीय व क्षेत्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति करना है। अनुग्रह नारायण सिंह ने विकेन्द्रित आर्थिक व्यवस्था की सलता के लिए छोटे–छोटे उद्योगों को कृषि के साथ समन्वित करने पर बल दिया, जिससे छोटे–छोटे गाँवों के समूह का संयुक्त औद्योगिक कृषक–समुदाय के रूप में विकास हो सकें। यहाँ 'कृषि औद्योगिक' से अनुग्रह नारायण सिंह का अभिप्राय कृषि व उद्योग का अन्तरंग रूप से एक दूसरे मे विलय से था। यथा–कृषक –औद्योगिक इकाई में धान , गेहूँ गन्ना, कपास के साथ–साथ रेडियो, साइकिल के पुर्जों बिजली के सामान व उस क्षेत्र की आवश्यकता के अन्य सामानो के पुर्जों, बिजली के सामान व उस क्षेत्र की आवश्यकता के अन्य सामानों का भी उत्पादन करना होगा जिससे शहर व गाँव के मध्य बढ़ते हुए भेद और शहरी बुराइयों को कम किया जा सकें।

संदर्भ–सूची :–

.1. अनुग्रह नारायण सिंह : माई टोटल रिवोल्यूशन, एवरी मेंस, दि–22 पृष्ठ 74

2. अनुग्रह नारायण सिंहः राजनैतिक क्रान्ति के लिए आहवान, पृष्ठ–41

3. वी0एन0 सिंहः भारतीय सामाजिक चिन्तन, पृष्ठ–316

4. अनुग्रह नारायण सिंह उद्धष्त, अनुग्रह नारायण सिंह पृष्ठ–103

5. पूर्वोक्त पृष्ठ–585

6. लोक दृष्टि में जय प्रकाश, में उद्धृत , पृष्ठ–85

7. अनुग्रह नारायण सिंह हमारी नजरों मे'' द रेडिकल ह्सूमेनिस्ट, मार्च, 1978, पृष्ठ–10

8. अनुग्रह नारायण सिंह, लोक–स्वराज्य, (सर्व सेवा संघ, वाराणसी) जुलाई, 1999, पृष्ठ–10

9. अनुग्रह नारायण सिंह, राजनैतिक क्रान्ति, (सर्व सेवा संघ, वाराणसी) सितम्बर, 1999

10. पूर्वोक्त, पृष्ठ–27